REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2022

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान पर मल्टीमीडिया और सोशल नेटवर्क के प्रदर्शन का प्रभाव

वीणा सिंह[1] , डॉ. हेमन्त खण्डाई[2]
[1]शोधार्थी, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
[2]शोध निर्देशक , संकायाध्यक्ष,सतत्शिक्षा एवं विस्तार विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय,भोपाल,(म.प्र.)

सारांश :

इस शोधपत्र का हेतु मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान का क्या स्तर होता है? सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान का क्या स्तर होता है? का कोई उक्त सभी प्रश्नों के समाधान हेतु शोध करने का निर्णय लिया। व्यक्ति के व्यवहार प्रतिमानों को समाज महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। वह जन्म के बाद जैसे–जैसे दूसरे व्यक्तियों और समूहों के सम्पर्क में आता है वैसे–वैसे उसका व्यवहार सामाजिक प्रतिमानों और मूल्यों के अनुसार विकसित हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति एक समय में परिवार, मित्रमण्डली, खेल समूह, साथी समूह, क्लब आदि अनेक समूहों से सम्बन्धित होता है। समाज के अनेक समूह मानव व्यवहार को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते है। इन सभी समूहों का मनुष्य पर प्रभाव समान ढंग से न पड़कर अलग–अलग ढंग से पड़ता है।

महत्वपूर्ण शब्द : शैक्षिक उपलब्धि, व्यवहार प्रतिमान, मल्टीमीडिया, सोशल नेटवर्क.

प्रस्तावना :–

21वीं सदी को हम यदि मीडिया की सदी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगीं। शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये आयामों द्वारा शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धियों का पहाड़ सा खड़ा कर दिया जिसमें मीडिया की लोकप्रियता सर्वत्र छायी रही। मीडिया ने न केवल वर्तमान में अपितु स्वतंत्रता संग्राम में भी अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय तथा स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का प्रमाणिक अभिलेख प्रस्तुत किया है। संभवतः अखबार ही पहला जनसम्पर्क माध्यम था, जिसमें मल्टीमीडिया का प्रयोग हुआ। 1985 में मारकोनी ने बेतार रेडियो संदेश भेजा था, फिर 1901 में टेलीग्राफ का प्रयोग रेडियो के द्वारा शुरू हुआ, आज भी रेडियो तरंग ऑडियो प्रसारण में प्रयोग हो रहा है। अपने शुरूआती दौर में सोशल नेटवर्क एक सामान्य सी दिखने वाली साईट होती थी और इसके जरिए उपयोगकर्ता एक दूसरे से चैटरूम के जरिए बात करते थे और अपनी निजी जानकारी व विचार एक दूसरे के साथ बांटते थे। 90 के दशक से इन साईट्स में बदलाव आया और इसमें फोटो, विडियो, संगीत शेयरिंग, ऑनलाइन गेम्स, विज्ञान, कला, प्लानिंग, चैटिंग, ऑनलाइन डेटिंग जैसी तमाम सुविधाएँ बढ़ी। भारत में सबसे ज्यादा प्रयोग होने वाली वेबसाइट में फेसबुक, ट्वीटर, यूट्यूब, इंस्टाग्राम व आरकुट शामिल है। सोशल नेटवर्क से लोगों में जन आंदोलन एवं जन जागरण की समस्त आकांक्षाओं और संभावनाओं का उदय हुआ यह भारत देश के लिए एक गौरव की बात है जन जागृति एवं

जनचेतना न केवल आम लोगों की आई बल्कि विद्यार्थियों ने यहां जनचेतना उन्हें उचित उत्तेजित कर स्वतंत्रता आंदोलन और स्वाधीनता एक दूसरे के पूरक बने एवं विद्यार्थियों को भी ष्शैक्षिक चेतना का बोध हुआ प्रेरित होकर वर्धक उत्तेजक पक्षों ने उनके मन मानस में चेतन नेता का किराया ज्ञान ज्ञान से उदित कर जनसामान्य को अपने अधिकार एवं कर्तव्य के संपादन हेतु आहुत किया राष्ट्र उन्नति में सर्वस्व आहुति देने हेतु विपक्ष और बुद्धिजीवियों को उत्प्रेरित किया इन्हीं समाचार पत्रों में राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों से संदर्भित होकर देशवासियों में जनतंत्र स्वतंत्रता समानता विश्व बंधुत्व की भावना का संचार किया।

आज के दौर में सोशल नेटवर्किंग हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन गया है ज्यादातर लोग तो इसके आदि हो चुके हैं अगर आपको कोई बात पब्लिक के बीच आसानी से पहुँचा नहीं है तो बस इसे किसी सोशल नेटवर्क साइट पर शेयर कर दीजिए। जहाँ सोशल नेटवर्किंग साइट अपने दोस्तों से मिलने का एक बहुत अच्छा साधन है वहीं दूसरी ओर यहां आप गंभीर मुद्दों पर चर्चा भी कर सकते हैं और लोगों की राय भी ले सकते हैं आजकल तो बड़े बड़े आंदोलन भी सोशल नेटवर्किंग साइट से शुरू होते हैं। साथ ही आप अपने बिजनेस प्रमोशन के लिए भी सोशल नेटवर्किंग साइट का इस्तेमाल कर सकते हैं और अपने प्रोडक्ट की जानकारी को बड़ी आसानी से आमजन तक पहुँचा सकते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क ने आज विश्व के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जरिए आज कोई भी व्यक्ति एक दूसरे से कहीं से भी सम्पर्क कर सकता है। इसका प्रयोग करने वाले युवाओं की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न क्रियाओं के द्वारा अनेक प्रकार का ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। वह ज्ञान एवं कौशल उसकी उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र भिन्न–भिन्न होते हैं, जैसे – एक व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में, एक खेल के क्षेत्र में, एक सामाजिक क्षेत्र में, अपने कौशल की स्थापना करता है। यह कौशल स्थापना उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर की होती है, इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित ज्ञान का कौशल शैक्षिक उपलब्धि कहलाता है।

मानव की समस्त क्रियाएँ उसका व्यवहार कहलाती है। इस व्यवहार के अनेक आधार होते हैं। इन आधारों के कारण ही वह उन समस्त व्यवहारों को अभिव्यक्त करता है जिसको उसने अनुभव से अर्जित किया है। मानव के व्यवहार को बल मिलता है – संवेदना से, गति मिलती है – प्रतिबोध से एवं पूर्णता मिलती है – संबोध से। संबोध की प्रक्रिया को पूर्णता प्रदान करने का श्रेय परिस्थिति जन्मता को है। कभी–कभी व्यवहार में इतनी जटिलता आ जाती है, उसमें असामान्यता की झलक प्रकट होने लगती है। ऐसी स्थिति में बनी हुई आदतों में परिवर्तन दृष्टिगत होता है।

अध्ययन का औचित्य :–

वर्तमान युग को मीडिया का दौर कह सकते हैं। सोशल मीडिया में स्वयं की सक्रिय भागीदारी होती है जिससे प्रयोक्ता अधिक अपनापन महसूस करता है वह खुलकर अपनी बात रख सकता है तथा दूसरों की प्रतिक्रियाएँ जानना चाहता है। सामाजिक मीडिया की ही देन है कि फेसबुक को विश्व का सर्वाधिक लोकप्रिय सोशल साइट कहा जाता है। सोशल मीडिया द्वारा हम अपने सम्पर्कों का दायरा बढ़ाते हुए अधिक से अधिक लोगों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं। सोशियल नेटवर्किंग साइट्स एक तरह की वेबसाइट्स हैं जिससे जुड़कर हम इस साइट पर पहले से जुड़े अन्य लोगों से भी जुड़ सकते हैं। इन लोगों में हमारे वर्तमान और कई बरसों पहले पिछड़े हुए दोस्त तथा हजारों किमी दूर रह रहे हमारे परिजन तथा मित्र भी हो सकते हैं। इन साइटों पर जुड़कर हम बिना किसी शुल्क के चाहे जितनी देर तक विचार विमर्श कर सकते हैं। यही नहीं हम एक दूसरे के फोटो और वीडियो भी देख सकते हैं। वीडियो कॉल के जरिये हम दूर रहकर भी आमने सामने बात कर सकते हैं। अन्य किसी माध्यम की अपेक्षा ये सस्ते तथा सुलभ होते हैं। इसलिए सोशल साइट्स काफी लोकप्रिय होती जा रही है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

2. मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार प्रतिमान का अध्ययन करना।
3. सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
4. सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार प्रतिमान का अध्ययन करना।
5. मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान में परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।
2. मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार प्रतिमान का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।
3. सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।
4. सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार प्रतिमान का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।
5. मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोधार्थी ने सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन के दौरान पाया कि समस्या के क्षेत्र में अनेकों विभिन्न प्रकार से एवं विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग चरों के संदर्भ कार्य में हुये हैं। सम्बन्धित चरों पर भारत एवं विदेशों के शोधों का पुनरावलोकन किया गया है। साहित्य के पुनरावलोकन ने शोधार्थी को अपने शोध के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान की है। साहित्य का पुनरावलोकन शोधार्थी के मन उठ रहे समस्यात्मक प्रश्नों एवं कठिनाइयों को समझने के अति सहायक सिद्ध हुआ है। शोधार्थी ने जिस सम्बन्धित साहित्य प्रकल्पो का अध्ययन किया वो निम्न प्रकार है।

अनुज श्योपुरी और अनीता श्योपुरी (2015) : इनका अध्ययन ''शिक्षा के शैक्षणिक प्रदर्शन और उनके व्यवहार पर पर सामाजिक नेटवर्किंग के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण करना।'' विषय पर था। छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन और उनके व्यवहार पर केंद्रित यह अध्ययन सोशल साइट्स की लोकप्रियता को जानने के साथ–साथ में मदद करेगा छात्रों और उनकी पढ़ाई पर पड़ने वाले प्रभाव आदि को जानना है।

पूर्वा जी शर्मा और संतोष कुमार विश्वकर्मा (2016) : इनका अध्ययन ''अकादमिक प्रदर्शन पर सोशल नेटवर्किंग साइटों के प्रभाव की जाँच करना है।'' यह अध्ययन सकारात्मक स्तर पर कुछ तथ्य प्रदर्शित करता है साथ ही छात्रों की शिक्षा पर सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलुओं की व्याख्या करता है। एक तरफ छात्र इसका उपयोग अपने असाइनमेंट को पूरा करने के लिए कर रहे हैं। फेसबुक जैसे विभिन्न प्लेटफॉर्म पर ज्ञान का आदान–प्रदान करने के लिए सूचनाओं को सुगम बनाना किताब, ट्विटर, यूट्यूब, ब्लॉग्स, रिसर्च गेट, कुछ सामग्री डाउनलोड करने के लिए उनके शोध में उनकी मदद करते हैं। जहाँ पर सीखने वाले समुदायों में शामिल होने के लिए, एक दूसरे का अनुसरण करने के लिए अनुसंधान, मंच बनाने के लिए, अकादमिक संसाधनों को साझा करने के लिए तथा विशेष विषयों पर अपनी शंकाओं को दूर करने के लिए शिक्षक छात्रों को विभिन्न सामग्री प्रदान कर सकते हैं।

अन्नपूर्णा शेट्टी (2015) : यह अध्ययन ''युवाओं की शिक्षा पर सोशल मीडिया नेटवर्किंग के प्रभाव पर एक सर्वेक्षण से सम्बन्धित है''। सोशल मीडिया का संदर्भ (फेसबुक, स्काइप, यूट्यूब, ट्विटर और माइस्पेस हैं।) जो अनुसंधान में उपयोग किया जाता है। उपकरण सर्वे में इस शोधकर्ता द्वारा 100 युवाओं को सम्मिलित किया गया। जो इस प्रश्नावली का सक्रिय रूप से उत्तर दें। पुरूषों की औसत भागीदारी महिलाओं से कम है। शोधकर्ता ने औसत आयु समूह जिनसे संपर्क किया वे 18–30 वर्ष के बीच थे। यहाँ सर्वाधिक उत्तरदाता छात्र थे जबकि एक छोटा अनुपात अलग–अलग कर्मचारी समूह के लोगों से संबंधित था। एकत्र किये गये डेटा से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सही दिशा और उचित तरीके से सोशल मीडिया का उपयोग युवाओं के शैक्षणिक करियर को विकसित कर सकता है।

प्रस्तावित शोध प्रविधिः–

किसी भी शोध कार्य के मूल आधार समंक होते हैं और समंकों की शुद्धता संकलन के क्षेत्र व विधि पर निर्भर करती है। प्रस्तावित शोध कार्य प्राथमिक और द्वितीयक आँकडों पर आधरित होगा।

आँकड़ों के स्रोत–

प्राथमिक आँकड़े :

प्राथमिक आँकडों का संकलन, शोधकर्ता द्वारा संरचित प्रश्नावली के माध्यम से युवाओं के साथ प्राथमिक आँकडा एकत्र किया है। साथ ही पी.आर.ए. (Participatory Appraisal Method) विधि के प्रयोग द्वारा भी समंकों का संकलन किया है।

द्वितीयक आँकड़े–

द्वितीयक आँकडों का संकलन, विभिन्न सांख्यिकीय पत्रिकाओं, सरकारी गजट (राजपत्र), शोध–पत्रिकाएँ, शोध आलेख, सरकारी रिपोर्ट, रिसर्च जर्नल्स, समाचार पत्र, पत्रिका, फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्पाईक, यूट्यूब, ह्वाट्सअप, जी.मेल इन्टरनेट आदि के अतरिक्त विभिन्न शासकीय एवं अर्द्धशासकीय कार्यालयों से संकलित किया है।

प्रस्तावित शोध के प्राथमिक स्त्रोत–

अ. सर्वेक्षण। ब. प्रश्नावली। स. निरीक्षण।

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने आंकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि एवं घटनोत्तर शोध विधि का प्रयोग भी किया है।

प्रयुक्त उपकरण :–

उपकरण की संरचना शोधार्थी ने शैक्षिक उपलब्धि मापनी और व्यवहार प्रतिमान मापनी के रूप में किया है।

सम्प्राप्तियाँ, निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता एवं सुझाव

सम्प्राप्ति :–

परिकल्पना :– 1

मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

निष्कर्ष :– मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि औसत स्तर की पायी गयी, अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना :– 2

मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार प्रतिमान का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

निष्कर्ष :– मल्टीमीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों का व्यवहार प्रतिमान उच्च स्तर का पाया गया, अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना :– 3

सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थिर्ययों की शैक्षिक उपलब्धि का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

निष्कर्ष :– सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि औसत स्तर की पायी गयी, अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना :– 4

सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थिर्ययों के व्यवहार प्रतिमान का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।

निष्कर्ष :– सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों का व्यवहार प्रतिमान उच्च स्तर का पाया गया, अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना संख्या – 5 :

मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थिर्ययों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

निष्कर्ष :– मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होने पर व्यवहार प्रतिमान में वृद्धि निम्न स्तर की होती है, इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

उपादेयता

1. मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क द्वारा हम अपने सम्पर्कों का दायरा बढ़ाते हुए अधिक से अधिक लोगों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं।
2. सोशियल नेटवर्किंग साइट्स एक तरह की वेबसाइट्स हैं जिससे जुड़कर हम इस साइट पर पहले से जुड़े अन्य लोगों से भी जुड़ सकते हैं। इन लोगों में हमारे वर्तमान और कई बरसों पहले पिछड़े हुए दोस्त तथा हजारों किमी दूर रह रहे हमारे परिजन तथा मित्र भी हो सकते हैं।
3. विडियो कॉल के जरिये हम दूर रहकर भी आमने सामने बात कर सकते हैं। अन्य किसी माध्यम की अपेक्षा ये सस्ते तथा सुलभ होते हैं। इसलिए सोशल साइट्स काफी लोकप्रिय होती जा रही है।
4. सामाजिक मीडिया एक अपरम्परागत मीडिया है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुंच बना सकते हैं।
5. सोशल मीडिया सामान्य संपर्क, संवाद या मनोरंजन से इतर नौकरी आदि ढूंढ़ने, उत्पादों या लेखन के प्रचार–प्रसार में भी सहायता करता है।
6. सोशल नेटवर्किंग या सामाजिक संबंधों के ताने–बाने को रचने में कम्प्यूटर की भूमिका आज भी किस हद तक है, इसे इस बात से जाना जा सकता है कि आप घर बैठे दुनिया भर के अनजान और अपरिचित लोगों से संबंध बना रहे हैं। ऐसे लोगों से आपकी गहरी छन रही है, अंतरंग संवाद हो रहे हैं, जिनसे आपकी वास्तविक जीवन में अभी मुलाकात नहीं हुई है। इतना ही नहीं, यूजर अपने स्कूल और कॉलेज के उन पुराने दोस्तों को भी अचानक खोज निकाल रहे हैं, जो आपके साथ पढ़े, बड़े हुए और धीरे–धीरे दुनियां की भीड़ में कहीं खो गए।
7. मल्टीमीडिया से लोगों में जन आन्दोलन एवं जनजागरण की समस्त आकांक्षाओं और सम्भावनाओं का उदय हुआ, यह भारत देश के लिए एक गौरव की बात है।
8. मल्टीमीडिया द्वारा अपनी लेखन सामग्री को सहेज कर रख सकते हैं। इसे जब चाहे स्वयं तथा दूसरे लोग भी लाभान्वित हो सकते हैं।
9. मल्टीमीडिया के माध्यम से मित्रों से उपयोगी पाठ्य सामग्री आसानी से प्राप्त की जा सकती है। सूचनाओं का आदान–प्रदान भी किया जा सकता है।

कार्ययोजना :–

शोधार्थी के अनुसार मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार प्रतिमान के स्तर को बढ़ाने हेतु हेतु निम्नलिखित कार्ययोजना अपनाई जा सकती हैं :–

1. मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क द्वारा अधिकाधिक लोगों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान करना चाहिए। इसके द्वारा होने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी से विद्यार्थियों को समय–समय पर अवगत करवाया जा सकता है।

2. मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाओं तथा लेखन सामग्री का संग्रह किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी अपने खाली समय का सदुपयोग कर सकते हैं।
3. विद्यालयों में विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया के माध्यम से उपलब्ध विभिन्न एप्स का प्रयोग करना सिखाया जा सकता है जिससे वे अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकते हैं जैसे नेट बैकिंग, नेट ट्रैवलिंग, विडियो कॉन्फ्रेसिंग इत्यादि।
4. विद्यालयों में मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क के माध्यम से योग व आयुर्वेद के महत्व को विद्यार्थियों को बताया जा सकता है।
5. सप्ताह में एक दिन विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया के माध्यम से शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक कार्यक्रम दिखाये जा सकते हैं जिससे उनकी मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निवारण हो सकता है।
6. विद्यार्थी मल्टीमीडिया एवं सोशल नेटवर्क के माध्यम से अध्यापकों को अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से अवगत करायें तथा इसके बाद उन समस्याओं पर खुलकर विचार–विमर्श किया जा सकता है।
7. विद्यार्थियों को मल्टीमीडिया के माध्यम से इंटरएक्टिव मैग्जीन समाचार पत्र इत्यादि को पढ़ा सकते हैं।
8. रचनात्मक उधोग ज्ञान, कला, मनोरंजन, पत्रकारिता आदि के लिए मल्टीमीडिया का उपयोग किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सुखिया, एस.पी.(1973), ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', द्वितीय संस्करण : आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या–487.
2. भटनागर, आर.पी. (1973), ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', आगरा : द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या –107
3. शर्मा, रामनाथ, (1978), ''नीतिशास्त्र की रूपरेखा'', मेरठ : केदारनाथ रामनाथ प्रकाशन, पृष्ठ संख्या –120.
4. राय, पी.एन. (1981), ''अनुसंधान परिचय'' चतुर्थ संस्करण, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या 63.
5. ढोढियाल, एस.पाठक. (1990) ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ संख्या –51
6. भार्गव, उषा (1993), ''किशोर मनोविज्ञान'' जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ संख्या–99.
7. जायसवाल, सीताराम (1994), ''शिक्षा बाल विकास'' नई दिल्ली : करोल बाग, आर्य बुक डिपो मंदिर पेज–221
8. लकीम, एम.ए. और अस्थाना विपिन (1994), ''मनोविज्ञान की शोध विधियां'', आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या–170.
9. प्रकाश, जी. (1995),''सांस्कृतिक एवं नैतिक शिक्षा नई'' नई–दिल्ली :शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ संख्या–27
10. चौहान, एस.एस.(1996), सर्वांगीण बाल विकास, नई दिल्ली : करोल बाग, आर्य बुक डिपो मंदिर, पेज नं. 591
11. भटनागर, सुरेश (1996), ''शैक्षिक प्रबंध और शिक्षा की समस्याएं'', मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या–440.
12. सारस्वत, डॉ मालती.(1997), ''शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आदत और शिक्षा'' आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर पृष्ठ संख्या–255.
13. व्यास, हरीशचन्द्र. (2001), '' हम और हमारी शिक्षा'', जयपुर : पंचशील प्रकाशन चौड़ा रास्ता, पृष्ठ संख्या–17.
14. शर्मा, आर.एस.(2004), ''शिक्षा अनुसंधान मेरठ'' आर.लाल. बुक डिपो पृष्ठ संख्या 145 –213.
15. शिव,खेड़ा.(2004), ''अचेतन मन और आदतें : जीत आपकी'' नई दिल्ली : मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, पृष्ठ संख्या 230 –235.
16. सचदेव, डी.आर. व विद्याभूषण (2004), ''समाजशास्त्र के सिद्धांत'' नई दिल्ली : किताब महल पृष्ठ संख्या 307.

17. श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा प्रीति (2004), ''बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास'' आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर ट्रस्ट संख्या 459 से 460.
18. सक्सेना, एन.आर.स्वरूप (2005), ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत'', मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन पृष्ठ संख्या–45.
19. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005)''पारिवारिक सुख के लिए है : किशोर मन की समझ'' नई–दिल्ली : श्रीविजय इन्द्र टाइम्स अंक –8 पृष्ठ संख्या–25
20. गौड, अनिता (2005),''बच्चों की प्रतिभा कैसे निखरे''नई दिल्लीः राज पाकेट बुक्स, पृष्ठ संख्या –14
21. चौबे, सरयू प्रसाद (2005), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', मेरठ इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस पेज न. 184
22. पारीक,प्रो.मथुरेश्वर (2005),उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा, जयपुरःशिक्षा प्रकाशन, पेज सं– 12
23. मित्तल, एम.एन.(2005), ''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'' मेरठ : इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, संख्या 294 295.
24. मित्तल, एम.एन.(2005), ''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'' मेरठ : इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, संख्या 294, 295.
25. मेहता, बी.आर.(2006), ''उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा'' कोटा बी.ई. प्रथम कोटा : खुला विश्वविद्यालय।
26. मेहता, बी.आर.(2006), ''अध्ययन पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति मूल्यपरक''शिक्षा कोटा : कोटा खुला विश्वविद्यालय पृष्ठ संख्या.
27. लोढ़ा, महावीरमल (2006), ''नैतिक शिक्षा के विविध आयाम'', जयपुर : हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ संख्या–1.
28. वादयानि, पुष्पा (2006), ''सुखद भविष्य की ओर पारिवारिक जीवन शिक्षा'', राजस्थान : ऐसी ब्यूरो स्वास्थ्य विभाग, पृष्ठ संख्या 37.
29. व्यास, हरिशचंद्र. (2006), ''व्यावहारिक जीवन में नैतिकशिक्षा का महत्व'' अजमेर माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, राजस्थान बोर्ड शिक्षा पत्रिका पृष्ठ संख्या 1–5.
30. शर्मा, वंदना. एवं राजकुमार (2006), ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन'', आगरा : राधा प्रकाशन पृष्ठ संख्या 92.
31. शर्मा, वल्लभ भाई (2006), संवाद पांचजन्य,वर्ष 63, अंक 44 पृष्ठ संख्या –5.
32. श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा प्रीति (2007), ''शिक्षा अनुसंधान में सांख्यिकी विधियां'', आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर.
33. सिंह, अरुण कुमार.(2006), ''उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान'', नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–55,126.
34. पाठक, पी.डी.(2007), ''शिक्षा मनोविज्ञान'' आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृ.सं.245,552,450
35. भार्गव, महेश (2007), ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'', आगरा : एचपी भार्गव बुक हाउस, पेज 463 –64,536.
36. सिंह, आर.आर.(2007), ''नैतिकता के लिए शिक्षा'', जयपुर : आर वी एस एस पब्लिशर्स, पृष्ठ संख्या–23.
37. माथुर, एस.एस.(2008), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या 55–76,421, 425.
38. रेणा, विनोद(2008), ''सार्वभौम शिक्षा की दिशा में उठाए कदम'' : नई दिल्ली वर्ष 52 अंक 11 पृष्ठ संख्या–7.
39. त्रिवेदी, आर.एन. एवं शुक्ला, डी.पी. (2008), ''रिसर्च मेथ्डोलॉजी'', जयपुर : कॉलेज बुक डिपो, पृष्ठ संख्या–321.
40. भटनागर, सुरेश (2009), ''शिक्षा मनोविज्ञान'' मेरठ : लायल बुक डिपो, पृष्ठ संख्या, 153.
41. यादव, एस.आर. अनुसंधान परिचय आगरा विनोद पुस्तक मंदिर संख्या–74.

वीणा सिंह
शोधार्थी, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)